माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
[redacted]	[redacted]	[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक: 2362714

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2	7	2	1	3	3	8	9	4	-
शब्दों में: दो	सात	दो	एक	तीन	[redacted]				

नीचे दिये गये उदाहरण के अनुसार रोल नम्बर भरें

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

पर्यवेक्षक एवं सहायक केन्द्राध्यक्ष द्वारा भरा जावे →

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 06

ग - परीक्षा का दिनांक 21 03 2017

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

[illegible] परीक्षा केन्द्र क्रमांक [illegible]927

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: Rashmi Pandey

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक

Laser/Inkjet copier Labels 64 X 34 mm X 24

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्र. क्र.

प्रश्न क्रमांक [1] उत्तर

(i) 8-10 या 10%

(ii) नमक।

(iii) दुग्ध विपणन।

(iv) सहकारिता।

(v) उत्तरप्रदेश।

प्रश्न क्रमांक [2] का उ०

(i) (b) → अंगोरा।

(ii) → (c) सानेन।

(iii) → (d) 0°C का।

(iv) (b) → 5%।

(v) -(a) → जीवाणु।

BSE

DARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBO

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक [3] के उ०

स्तम्भ "क"	स्तम्भ "ख"
(i) बाह्य परजीवी →	जूँ।
(ii) फिल्टर पासिंग जीवाणु →	फाउल पॉक्स।
(iii) विषाणु टाइप-एक →	न्यूकेसिल्स।
(iv) स्ट्रिप कप परीक्षण →	थनैला।
(v) क्लॉस्ट्रिडियम सोवियाई →	लंगड़ी।

प्रश्न क्रमांक [4] के उ०

(i) सत्य।

(ii) असत्य।

(iii) सत्य।

(iv) सत्य।

(v) असत्य।

EDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र. [5] का उ.

अथवा

(A) देशी जातियाँ :— रोहू, कतला।

(B) विदेशी जातियाँ :— बिग हेड, सिल्वर कार्प, कॉमन कार्प।

प्रश्न क्रमांक (6) का उ.

शूकर में होने वाले 4 रोग निम्न हैं:-

(A) शूकर इन्फ्लूएन्जा।
(B) खुरपका - मुँहपका।
(C) खुजली।
(d) एन्थ्रेक्स।
(E) स्वाइन।

प्रश्न क्रमांक [7] का उ.

माँस के लिए पाली जाने वाली बकरियों के नाम निम्न हैं:-

(A) ब्लैक बंगाल।
(B) गंजम।
(C) चेंगू।
(D) कश्मीरी।
(E) मारवाड़ी।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक [8] का उ.

अथवा

क्रीम सेपरेटर मशीन के चार भागों के नाम निम्न हैं:-

(A) क्रीम स्पाउट ।
(B) सेपरेटर मशीन का फ्रेम ।
(C) रेगूलेटर ।
(d) बाउल ।
(E) डिस्क ।
(F) रबर रिंग ।

क्रीम सेपरेटर मशीन अपकेन्द्रीय सिद्दांत पर कार्य करती है।

प्रश्न क्रमांक [9] का उ.

पशु शरीर में प्रोटीन के कार्य निम्न हैं:-

(i) प्रोटीन पशु शरीर की कोशिकाओं का निर्माण करता है, तथा यह टूटे-फूटे उतकों की मरम्मत का कार्य करता है।

(ii) प्रोटीन पशु शरीर के लिए आवश्यक सभी अमिनों अम्ल प्रदान करता है।

(iii) प्रोटीन मुर्गियों में बाल, सींग, खुर तथा हड्डियों के निर्माण में सहायक है।

(iv) यह भ्रूण के विकास में भी सहायक है।

कृपया पृष्ठ पलटें ____ जारी है....

B
S
E

FSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक [10] का उ.

अथवा

भारत में साइलेज के कम प्रचलन के 3 कारण निम्न हैं :-

(1) भारत में, साइलेज बनाने के लिए आवश्यक हरे चारे पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है।

(2) चारे के खराब होने (के भय) से भी ग्रामीण कृषक साइलेज बनाने का जोखिम नहीं उठाते हैं।

(3) भारतीय कृषकों के पास साइलेज बनाने के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं हैं।

(4) भारतीय कृषकों का निर्धन होना भी साइलेज के कम प्रचलन का एक प्रमुख कारण है।

प्रश्न क्रमांक (11) का उ.

अथवा

उत्तम पशु जाँचकर्ता के आवश्यक गुण निम्न हैं :-

(i) जाँचकर्ता को पशु की नस्ल के बारे में विस्तृत जानकारी होनी चाहिए।

(ii) जाँचकर्ता को पशु की आंतरिक तथा बाह्य शरीर रचना का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए।

(iii) जाँचकर्ता के मस्तिष्क में एक स्वस्थ्य आदर्श पशु का चित्र होना चाहिए।

(iv) जाँचकर्ता की पशुपालन के कार्यों में विशेष रुचि होना चाहिए।

(v) जाँचकर्ता चुस्त तथा अनुभवी होना चाहिए।

BSE

मध्यप्रदेश
SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक [12] का उ.

गाभिन गाय के प्रमुख लक्षण निम्न हैं :-

(1) गाभिन गाय शांति धारण कर लेती है, तथा एकांत वातावरण पसंद करती है।
(2) गाभिन गाय पुनः मदचक्र में नहीं आती है।
(3) गाभिन गाय नर पशुओं को अपने पास नहीं आने देती है।
(4) गाभिन गाय का दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है।
(5) गाभिन गाय का वजन तथा पेट का आकार बढ़ने लगता है।
(6) लगभग 5 महीने बाद गाय का अयन विकसित होने लगता है।

BSE

प्रश्न क्रमांक [14] का उ.

अथवा

स्वस्थ पशु के प्रमुख लक्षण निम्न हैं :-

(1) स्वस्थ पशु की आँखे चमकीली तथा कान चुस्त व खड़े हुए होते हैं।
(2) स्वस्थ पशु जुगाली की क्रिया सुचारु रूप से करता है।
(3) स्वस्थ पशु की हृदय गति व नाड़ी गति सामान्य होती है।
(4) स्वस्थ पशु का थूथन गीला रहता है।
(5) स्वस्थ पशु का तापमान सामान्य होता है।
(6) स्वस्थ पशु का गोबर दुर्गंध रहित होता है।

कृपया पृष्ठ पलटें — जारी है :-

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (13) का उ.

पशु चिकित्सा में प्रयुक्त उपकरणों के उपयोग निम्न हैं:-

(a) बर्डिजोकैस्ट्रेटर :- यह धातु का बना हुआ एक यंत्र होता है, इसका आकार कैंची की तरह होता है।

उपयोग:- बर्डिजोकॉस्ट्रेटर यंत्र का उपयोग नर पशुओं को बधिया करने के लिए किया जाता है।

(b) डोकिंग मशीन :- यह धातु की बनी हुई एक मशीन होती है इसे "टेल कटर" भी कहते हैं।

उपयोग:- इस यंत्र का प्रयोग पशुओं की पूँछ काटने के लिए किया जाता है।

(c) ड्रेंचिंग बोतल :- यह लकड़ी, बाँस या धातु की बनी हुई एक खोखली नली होता है, जिसका एक सिरा बंद रहता है।

उपयोग:- ड्रेंचिंग बोतल का प्रयोग पशु को तरल रूप में दवा पिलाने के लिए किया जाता है।

(d) कैंची:- यह धातु या स्टील की बनी हुई कैंची होती है।

उपयोग:- कैंची का उपयोग पशु चिकित्सा में प्रयुक्त पट्टियों, गोलियों, तथा शल्य क्रिया के दौरान लगाये गये टाँकों के धागे इत्यादि को काटने में किया जाता है।

BSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक [15] का उ.

रबड़ी :– "सामान्य दूध को खुली कढ़ाही में धीरे-धीरे गर्म करने पर एक गाढ़ा लच्छेदार पदार्थ प्राप्त है, जिसे रबड़ी कहते हैं" ।

रबड़ी का औसत संगठन निम्नानुसार है :–

क्रमांक	अवयव	मात्रा
(1)	जल	36%
(2)	वसा	20%
(3)	प्रोटीन	10%
(4)	लैक्टोज	17%
(5)	खनिज	2%
(6)	शर्करा	15%
	कुल	100%

प्रश्न क्रमांक [16] का उ.

अथवा

क्र.	अवयव	मात्रा
(1)	जल	60%
(2)	वसा	10%
(3)	प्रोटीन	10%
(4)	शर्करा	20%
	कुल	100%

कुल्फी का रासायनिक संगठन उपरोक्त है ↑

कृपया पृष्ठ पलटे — जारी है...

BSE

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्र. क्र.

प्रश्न क्रमांक (17) का उ.

अथवा

शुद्ध दुग्ध चूर्ण का औसत संगठन निम्नानुसार है :-

क्र.	अवयव	मात्रा
(1)	जल	3.7%
(2)	वसा	26%
(3)	प्रोटीन	27.5%
(4)	लैक्टोज	36.8%
(5)	खनिज	6.0%
	कुल	100%

औद्योगिक स्तर पर दुग्ध चूर्ण बनाने की 2 विधियों के नाम निम्न :-

(A) फुहार शुष्कन विधि ।
(B) ड्रम शुष्कन विधि ।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (18) का उ.

प्राकृतिक विधि से अण्डे सेने से होने वाले लाभ निम्न हैं :-

(i) प्राकृतिक विधि द्वारा अण्डा सेने में व्यय कम आती है।

(ii) इस विधि द्वारा अण्डा सेनें से दोहरा लाभ होता है, पहला तो कुड़क मुर्गियाँ अण्डे सेती हैं, तथा दूसरा मुर्गी (कुड़क मुर्गी) चूजों का पालन पोषण करती है।

(iii) छोटे व्यवसायियों (कुक्कुट पालकों) के लिए यह विधि सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

(iv) कुड़क मुर्गी एक बार उद्भोदन / उद्भवन शुरू करने के पश्चात लगातार अण्डों को सेती रहती है।

(v) इस विधि में अतिरिक्त स्थान की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

प्राकृतिक विधि द्वारा अण्डे सेने से होनी वाली हानियाँ निम्न हैं :-

(i) इस विधि द्वारा अण्डों को सेने के लिए कुड़क मुर्गी का चयन करना होता है, कुड़क मुर्गी के चयन में कठिनाई होती है। यदि कुड़क मुर्गी के स्थान पर किसी अन्य मुर्गी का चयन कर लिया जाता है, तो नुकसान का सामना करना पड़ता है।

(ii) प्राकृतिक विधि बड़े क्षेत्र पर या बड़े पैमाने (व्यवसायिक स्तर) पर अण्डे सेने के लिए अनुपयुक्त होती है।

(iii) कुड़क मुर्गी समय पर उपलब्ध नहीं होती है।

कृपया पृष्ठ पलटें — जारी है...

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्रमांक (19) का उ.

कुक्कुट आहार में सम्मिलित किये जाने वाले खाद्य पदार्थों के नाम निम्न हैं :- 5

(i) अनाजों का मिश्रण।
(ii) चावल या गेहूँ की भूसी।
(iii) मछलियों का चूर्ण।
(iv) कंकड़।
(v) मूँगफली की खली।
(vi) हड्डियों का चूरा।
(vii) खनिज।
(viii) है

कुक्कुट आहार में जल का महत्व निम्न बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है -

(1) पानी कुक्कुटों के शरीर से अपशिष्ट पदार्थों को निकालने का कार्य करता है।

(2) पानी कुक्कुट के शरीर के तापमान को नियंत्रित रखता है।

(3) पानी कुक्कुटों की प्यास बुझाता है।
(4) पानी कुक्कुटों की वृद्धि एवं विकास में सहायक है।
(5) पानी मुर्गियों में माँस तथा अण्डा उत्पादन को बढ़ाता है।
(6) पानी भोजन को घोल का रूप प्रदान करता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक [20] का उ.

अथवा

कॉक्सीडियोसिस (खूनी दस्त)

(A) रोगकारक :- कॉक्सीडिया नामक प्रोटोजोआ के संक्रमण से होता है।

(B) लक्षण :- (1) मुर्गियों को खून के पतले दस्त होने लगते हैं।
(2) खून की कमी के कारण मुर्गियों की कलगी, पैर तथा पूरा शरीर पीला पड़ जाता है।
(3) जमीन पर रक्त युक्त बीटे पायी जाती है।
(4) मुर्गियाँ झुण्ड के रूप में इकट्ठा होने लगती हैं।
(5) मुर्गियाँ दाना खाना बंद कर देती हैं।

(C) रोकथाम के उपाय :- (i) विभिन्न आयुवर्ग या अलग-अलग आयु के चूजों को अलग-अलग कमरों में रखना चाहिए।

(ii) मुर्गिशाला की नियमित साफ-सफाई, चूने से पुताई तथा बिछाली हटाना चाहिए।

(iii) मुर्गिशाला में समय-समय पर कीटाणुनाशकों का छिड़काव करना चाहिए।

(iv) मुर्गियों को इकट्ठा नहीं होने देना चाहिए

XXX

समाप्त

B S E